

गुरुर आरधनर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥)

बांगला अनुवाद: “गुरुर आरधनर नर करले साधक समस्त कछु अर्जन करतले पारले नर। गुरुर व्यतीत से मन्त्र, योग अथवा साधनर कछुई जानले नर।”

ऐई उद्धृति स्पष्ट करले देये, गुरुर छाड़ा अन्य कनो पथ नहे। शुधुमात्र शास्त्रपाठ करले, अथवा मन्त्र मुखस्थ करले कनो सद्धि आसबे नर, यदनि तर पछेने गुरुर शुधु दीक्षा ओ कृपा थरके।

उपनषिदीय गुरुरबोधके आरओ एकटि चरम ओ व्यक्तगित मात्राय नयले यर।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय—य बला हयछे ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥)

बांगला अनुवाद: “तुमति तांके नम्रभावले प्रश्न करले, सबे करले। सेई ज्णानीर तामाके तत्त्वज्ञान दान करबने।”

गुरुर हलने ॐ नमो भगवते वासुदेवाय जड़ ओ चतेन सत्तर मध्यसे सते।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥)

बांगला अनुवाद: “गुरुरे परब्रह्म, अतएव सर्वदा गुरुर स्मरण करर उचिति।”  
शास्त्रले बहुवार स्पष्ट भाषाय बला हयछे गुरुर छाड़ा मन्त्र नषिफल, दीक्षा अबडे, एवंग साधनर अनषि्टकर। कुलार्गव तन्त्रले एकाधकि श्लोके ऐई बक्तव्य उठले एसछे। बला हयछे ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
(कुलार्गव तन्त्र, उल्लास १ॡ, श्लोक ११)

बांगला अनुवाद: “ये गुरुर अनुमोदन व्यतीत मन्त्र जप करले, से मन्त्रले अर्थई बोखले नर; आमि बलति तर समस्त साधनर व्यर्थ एवंग एमन जन्म वृथा।”

शास्त्रले कथति आछे दीक्षा व्यतीत मन्त्र मृतप्राय। यमेन अग्निहीन होम, तमेनई गुरुरहीन साधनर। शक्तसंहति, तन्त्रराजतन्त्र एवंग श्रीकुलतन्त्र—सह बहु ग्रन्थले एकथा पुनःपुनः उच्चरति हयछे।

राजतन्त्रले बला हयछे ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
(तन्त्रराजतन्त्र, अध्याय १, श्लोक ११)

बांगला अनुवाद: “गुरुर मुख व्यतीत ये मन्त्र नजिले जप करर हय, तर यदिसद्धिओ देये, तबले तर प्रतेसद्धि मरत्र; आत्मसद्धि नय।”

ऐई श्लोकटि एक अनुपम सतर्कवर्णी। गुरुर आशीर्वाद छाड़ा कनो मन्त्र यदिफल देयेओ, तबले तर बशुधु नय; तर प्रायई नमिचतेनर शक्ति जागयले ताले ॥ यर





হয.ছেঞে

□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□  
□□□□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□

(গুরু স্তোত্র)

বাংলা অনুবাদ: “যিনি সমগ্র চরাচর জগতরে অন্তরালে সেই অখণ্ড তত্ত্বকে দর্শন করিয়েছেন, তাঁকে আমি প্রণাম জানাই।”

গুরুগীতায়. বলা হয.ছেঞে

□□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□  
□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□

(গুরুগীতা, শ্লোক ৮৭)

বাংলা অনুবাদ: “সমস্ত তীর্থ, সমস্ত দেবতা, সমস্ত মন্ত্র ও দর্শনসবকছির একত্র রূপ হলেন গুরু।”

শাস্ত্র বারবার এই কথাই বলে গুরু মানবে একজন পঠন-পাঠনের মানুষ নয়, তিনি এক চতেনার ক্ষেত্র। তিনি এক চলমান অগ্নি, যাঁর সংস্পর্শে শিষ্যেরে মায়িকি অস্তিত্ব দগ্ধ হয়ে তার অন্তর্নহিতি দেবেত্ব জাগে।

□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□  
□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□

(কুলার্ণব তন্ত্র, উল্লাস ১১)

বাংলা অনুবাদ: “ত্রলোকেরে মধ্যে গুরুর চয়ে উচ্চতর কছি নহে। যিনি গুরুকে যথাযথভাবে উপলব্ধি করেন, তিনি আত্মার আনন্দে প্রতিষ্ঠিত হন।”

□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □ □□□□□□□□□ □□□□  
□□□□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□

(□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□, □□□□□□ ১১৭)

বাংলা অনুবাদ:

“গুরুর চয়ে শ্রেষ্ঠ কোনও তত্ত্ব নহে, গুরুর চয়ে বড় কোনও তপস্যা নহে। তত্ত্বজ্ঞানই পরম; আর যিনি সেই জ্ঞানেরে আধার, সেই গুরুকে আমি প্রণাম জানাই।”